अनेकों इच्छाएँ

अलीकी, हिंदी : विदूषक

बहुत पुराने ज़माने की बात है. दुनिया के तमाम पेड़ों में से एक पेड़ पर एक असंतुष्ट चिड़िया रहती थी. उसका नाम था - ट्वीडेल. ट्वीडेल की प्रबल इच्छा थी कि वो जंगल की सबसे बड़ी चिड़िया बने.

जंगल में एक अच्छी परम्परा थी. चिड़िये अपनी इच्छा, एक पत्ती पर लिख सकती थीं और फिर उनकी मनोकामना पूरी हो जाती थी. ट्वीडेल को जब उस परंपरा के बारे में मालूम पड़ा तो उसने तुरंत अपनी चोंच से अपनी इच्छा एक पत्ते पर लिखी और उसे बाँझ के पेड़ के कोटर में डाल दिया. इच्छा पूर्ती करने वाली चिड़ियों ने जब ट्वीडेल की अर्जी को पढ़ा तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ. आज तक किसी भी चिड़िया ने खुद को एक हाथी के आकार में बदलने की इच्छा प्रगट नहीं की थी!

इच्छा पूर्ती करने वाली चिड़ियों का काम चिड़ियों की मनोकामना पूरी करना था. इसलिए बहुत जल्द ही ट्वीडेल का आकार बहुत बड़ा हो गया. पर यह ट्वीडेल की पहली इच्छा थी और शायद उसकी मुश्किलों की शुरुआत भी!

अनेकों इच्छाएँ

अलीकी, हिंदी : विदूषक

बहुत पुराने ज़माने की बात है. दुनिया के तमाम पेड़ों में एक पेड़ पर एक असंतुष्ट चिड़िया रहती थी. उसका नाम था ट्वीडेल.

वैसे ट्वीडेल के पास किसी चीज़ की कमी नहीं थी. फिर भी वो बहुत दुखी रहती थी.

ट्वीडेल की सुन्दर आवाज़ बहुत मशहूर थी.
बाकी चिड़िए उसके गीत सुनने के लिए हमेशा
उसके आसपास जमा रहती थीं. पर उससे
ट्वीडेल को कोई ख़ुशी नहीं मिलती थी.
धीरे-धीरे उसके गीत उदास होते चले गए.

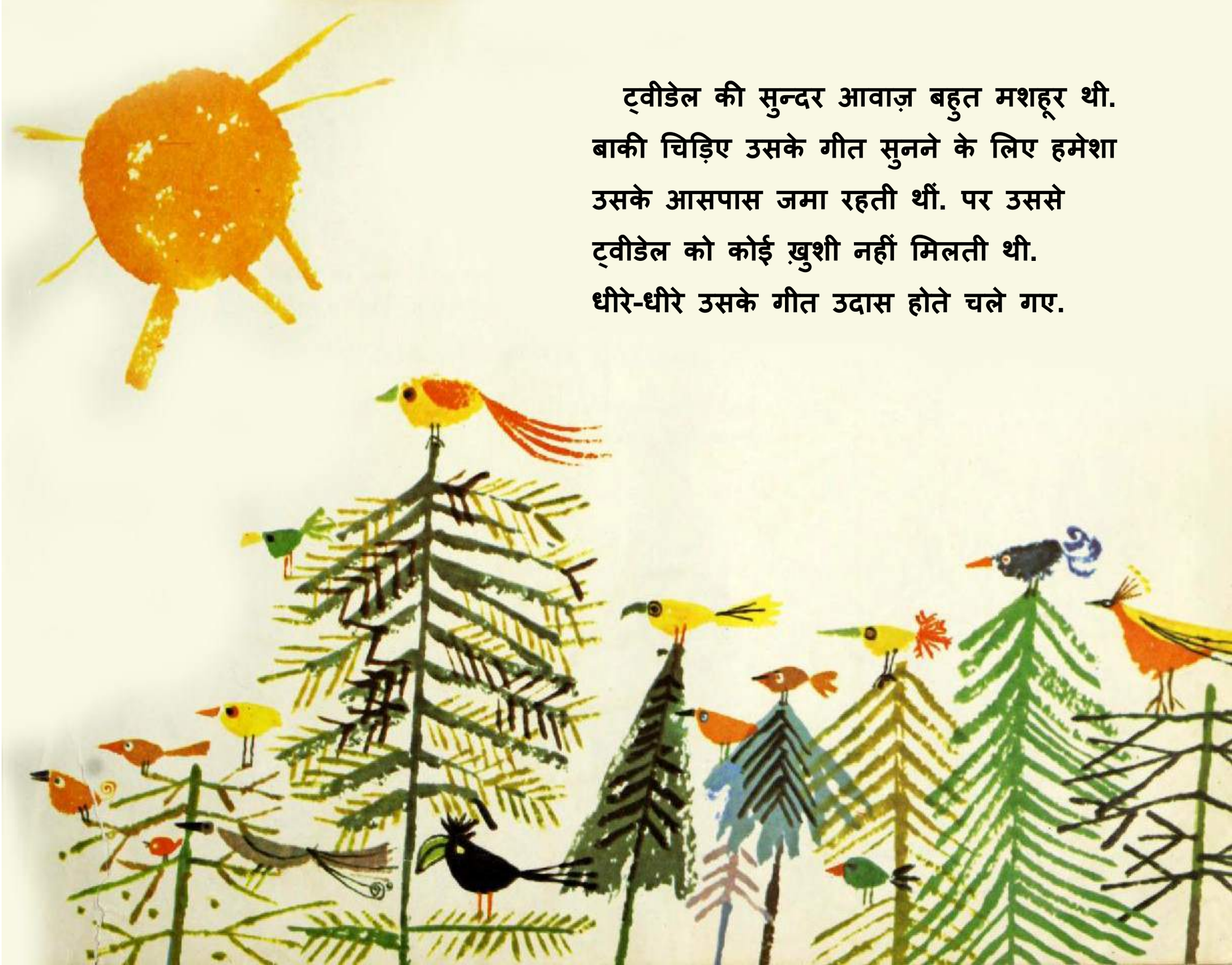

ट्वीडेल बहुत छोटी थी और वो अपने छोटे आकार से तंग आ चुकी थी.
बहुत सी अन्य छोटी चिड़ियों का भी यही हाल था. वो दुनिया की सबसे बड़े आकार की चिड़िया बनना चाहती थी.

वो एक हाथी के आकार की चिड़िया बनना चाहती थी.

वो इसी सोच में डूबी रहती और सोचती कि वो बड़े आकार की कैसे बने?

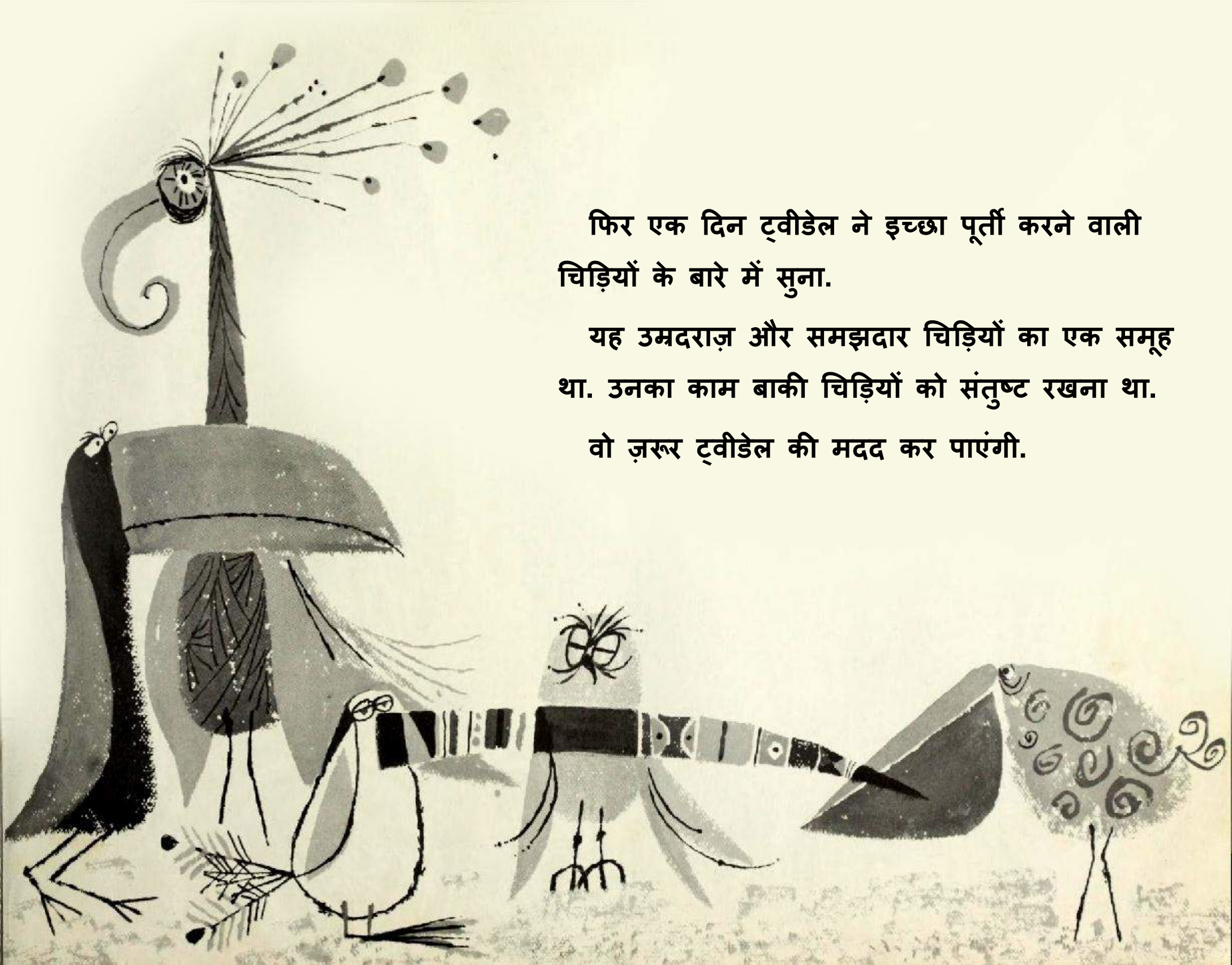

फिर एक दिन ट्वीडेल ने इच्छा पूर्ती करने वाली चिड़ियों के बारे में सुना.

यह उम्रदराज़ और समझदार चिड़ियों का एक समूह था. उनका काम बाकी चिड़ियों को संतुष्ट रखना था.

वो ज़रूर ट्वीडेल की मदद कर पाएंगी.

फिर जंगल के नियम के अनुसार ट्वीडेल ने अपनी इच्छा एक पत्ते पर लिखी और उसे बाँझ के पेड़ के बड़े कोटर में डाल दिया.

इच्छा पूर्ती करने वाली
चिड़ियों को पहली बार इस
तरह की अर्जी मिली थी.
ट्वीडेल चिड़िया, हाथी जितनी
बड़ी होना चाहती थी!

पर इच्छा पूर्ती करने वाली
चिड़ियों का काम अन्य चिड़ियों
को खुश और संतुष्ट रखना था.
इसलिए उन्होंने ट्वीडेल की
मांग को अपनी मंज़ूरी दी.
तीन घंटे बाद ट्वीडेल हाथी के
आकार की चिड़िया बन गई!

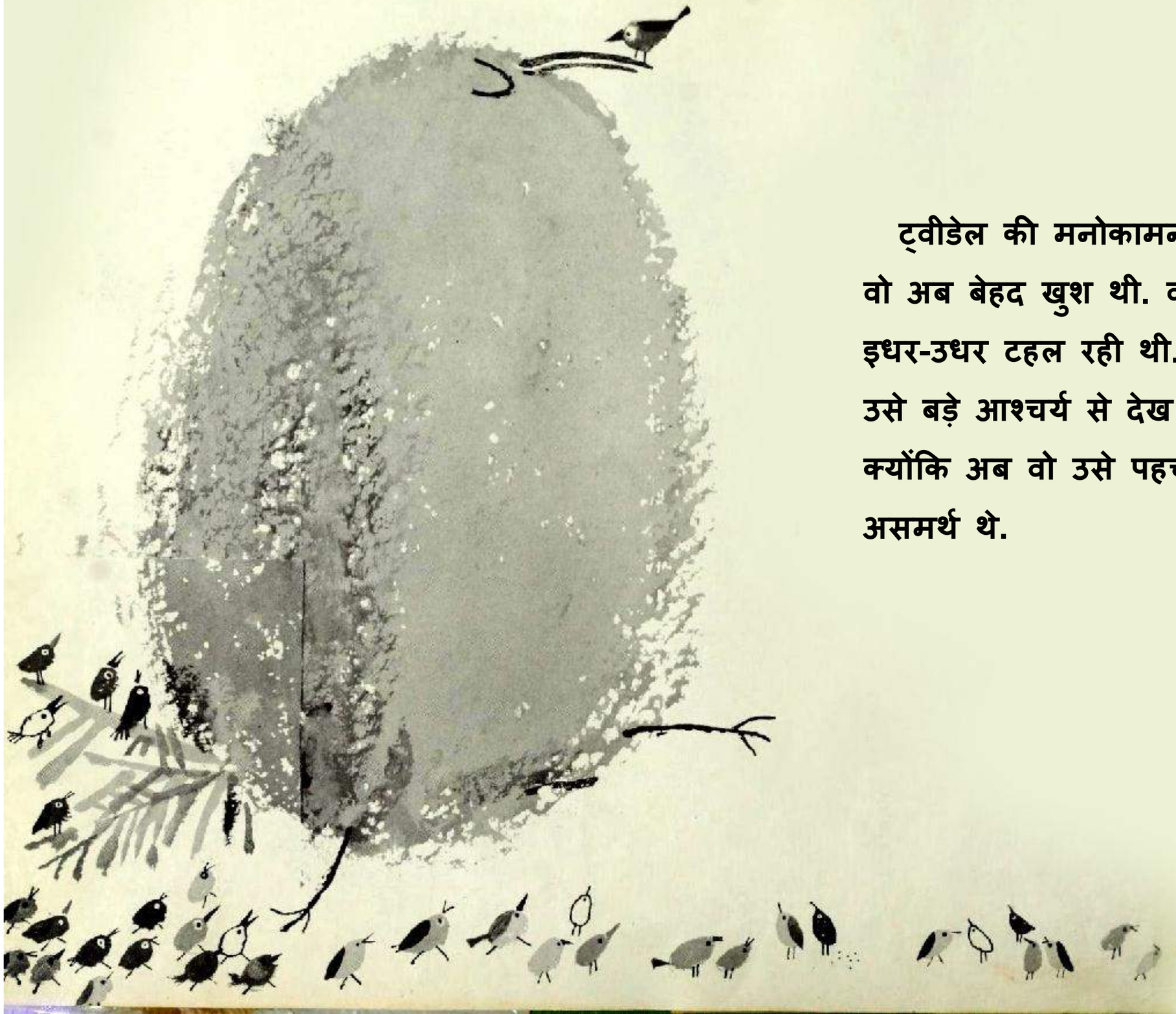

ट्वीडेल की मनोकामना पूरी हुई! वो अब बेहद खुश थी. वो गर्व से इधर-उधर टहल रही थी. उसके मित्र उसे बड़े आश्चर्य से देख रहे थे, क्योंकि अब वो उसे पहचानने में असमर्थ थे.

ट्वीडेल की ख़ुशी जल्दी ही रफ़ूचक्कर हो गई. उसने उड़ने की कोशिश की, पर अपने भीमकाय आकार के कारण अब उसके लिए उड़ना संभव नहीं था. वो बहुत भारी थी और उसके पतले पैर उसे संभाल नहीं पा रहे थे.

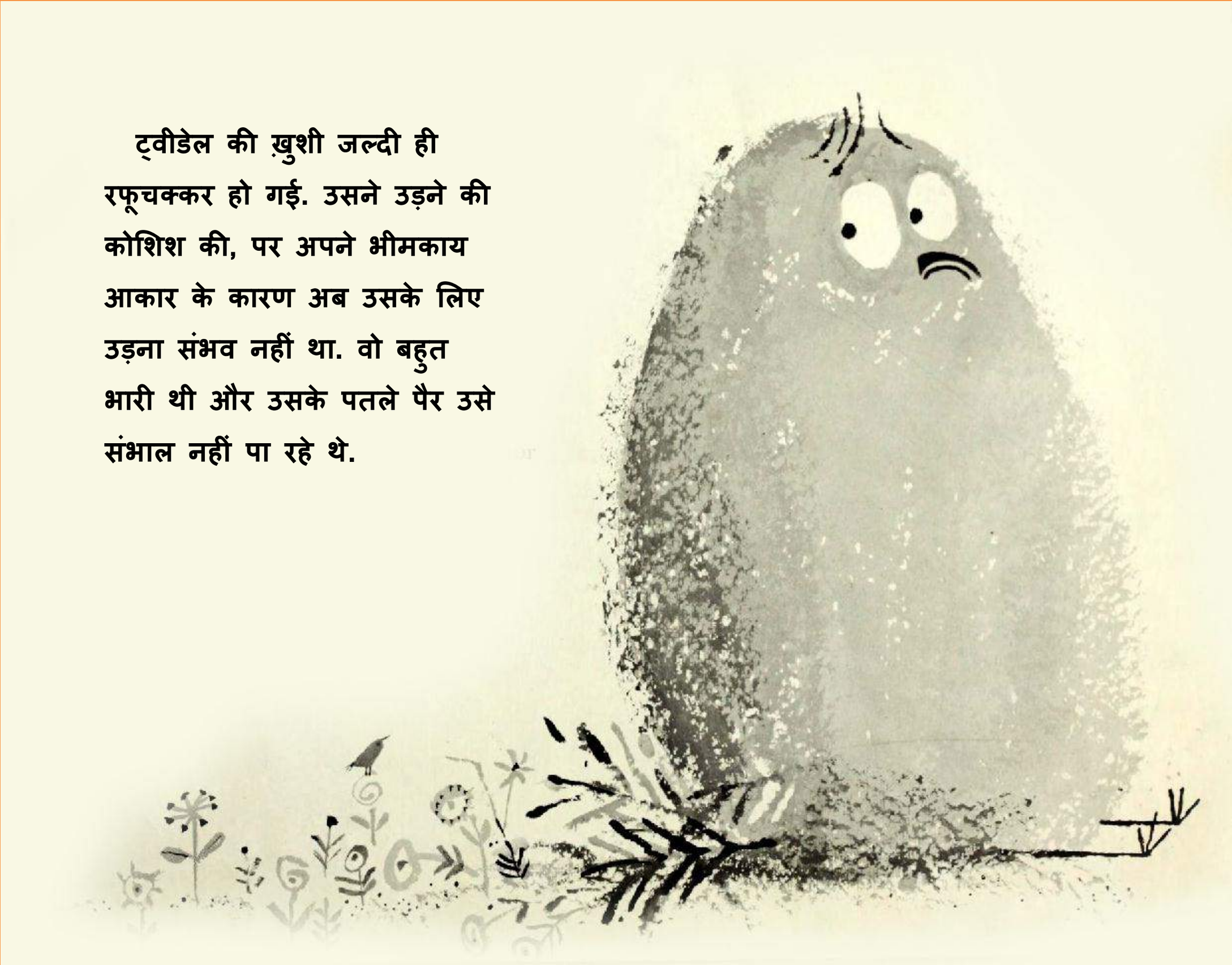

इसलिए ट्वीडेल ने दुबारा से एक पत्ती पर अपनी नई फरमायश लिखी.

प्रिय इच्छा पूर्ती करने वाली चिड़ियों

मेरा शरीर है भारी, पैर मगर कमज़ोर,
नई मनोकामना पर, इसलिए मेरा ज़ोर
उठने और तेज़ दौड़ने के लिए
कृपा मुझे लोमड़ी के पैर दें.

इच्छा पूर्ती करने वाली चिड़िए काफी उलझन में पड़ीं. कोई चिड़िया भला दो अजीब मांगे कैसे सकती थी? पर शाम की मीटिंग के बाद उन्होंने ट्वीडेल को चार पैर देने की बात तय की.

ट्वीडेल अब तेज़ी से चल सकती थी. पर जल्द ही उसे पता चला कि चार पैरों पर चलना दो पैरों के मुकाबले कहीं कठिन था. पर उसे चार पैरों पर चलना सीखने में मज़ा आ रहा था. फिर चलते समय वो धम्म से एक तरफ गिरी.

जल्द ही ट्वीडेल के सामने एक नई समस्या खड़ी हुई. चोंच से खाने में उसे अपने बड़े पेट को भरने में बहुत समय लगता था. अक्सर वो भूखी ही रहती थी. धीरे-धीरे वो पतली और बीमार दिखने लगी.

फिर हताश होकर उसने पत्ते पर अपनी अगली इच्छा लिखी.

मेरी हालत देखकर आप होंगी दुखी.
छोटे-मोटे टुकड़े ही मैं खा पाती हूँ सखी.
बीजों के सिवा मुझे और भी खाना होगा.
उसके लिए शेर का सिर चाहिए होगा.

उसके बाद इच्छा पूर्ती करने वाली चिड़ियों ने आपस में गंभीर चर्चा की. कितनी सारी और चिड़िये परेशानी में थीं – जिनकी सचमुच की असली समस्याएँ थीं. उन्होंने ट्वीडेल से कहा कि इस इच्छा के बाद वो उसकी मदद बिल्कुल नहीं कर पाएंगी. हरेक चिड़िया की केवल तीन ही इच्छाएं पूरी की जाएँगी और आगे नहीं! इच्छा पूर्ती की भी तो एक सीमा होती है!

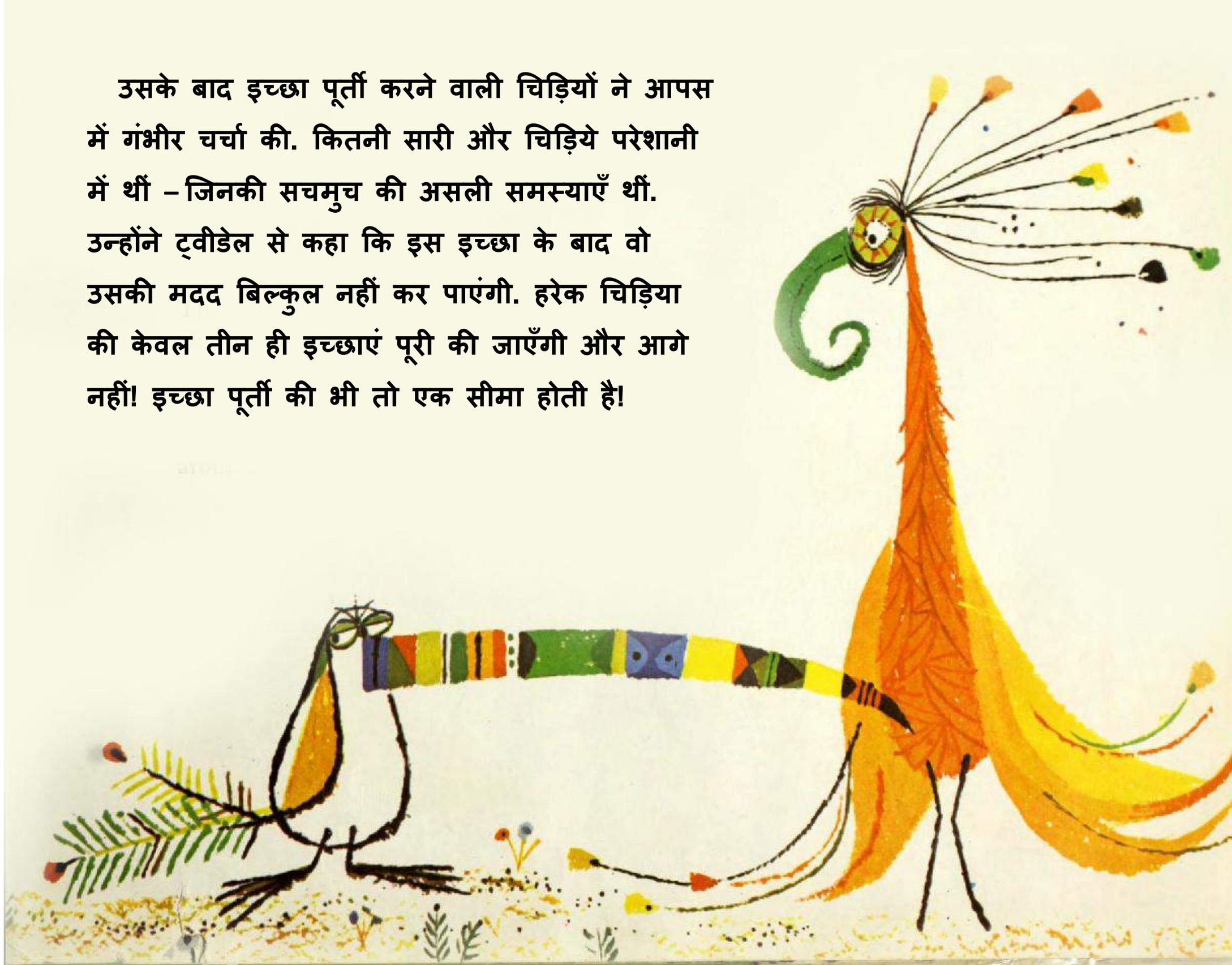

ट्वीडेल ने उनका शुक्रिया अदा किया और फिर वो ख़ुशी से कूदी. वो दुनिया की सबसे बड़ी चिड़िया थी जो दौड़ना और कूदना सीख रही थी. वो अब जितना चाहे भोजन खा सकती थी!

पर अब ट्वीडेल को देखते ही बाकी जानवर डर के मारे उससे दूर भागने लगे. क्यों? उन्होंने आजतक कभी इतना बड़ा और अजीब जानवर नहीं देखा था. उन्होंने खुद को इतने अच्छी तरह से छिपाया कि ट्वीडेल उन्हें खोज ही नहीं पाई.

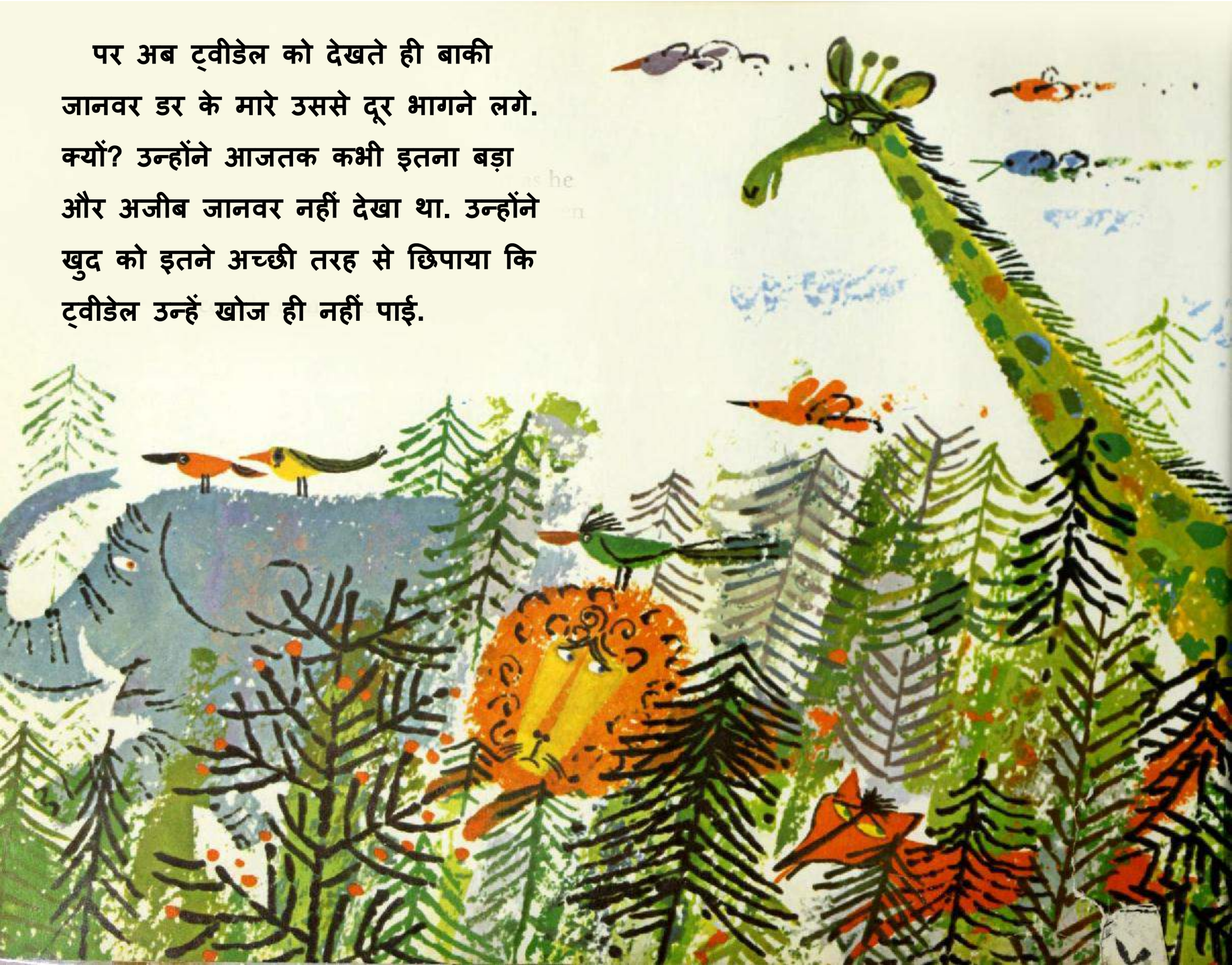

जैसे-जैसे दिन बीते ट्वीडेल को समझ में आया कि शेर का सिर होने से वो अपनी ज़रुरत का भोजन नहीं खोज पाती थी. एक छोटा कीड़ा, एक बीज – क्या ऐसे खाने से भला एक हाथी का पेट भरेगा! ट्वीडेल अब बहुत अकेलापन भी महसूस करने लगी थी, क्योंकि अब कोई अन्य जानवर उसके पास फटकता तक नहीं था.

फिर एक दिन ट्वीडेल को अपने पुराने मित्रों की आवाजें सुनाई दीं. फिर वो बहुत खुश और उत्तेजित हुई और झट से उनके बीच पहुंची. वहां जाकर वो ख़ुशी से जोर से चिल्लाई.

जब जानवरों ने उस डरावने भीमकाय जीव के मुँह से चीं-चीं की बारीक आवाज़ सुनी तो फिर वो सब खिलखिलाकर हंसने लगे!

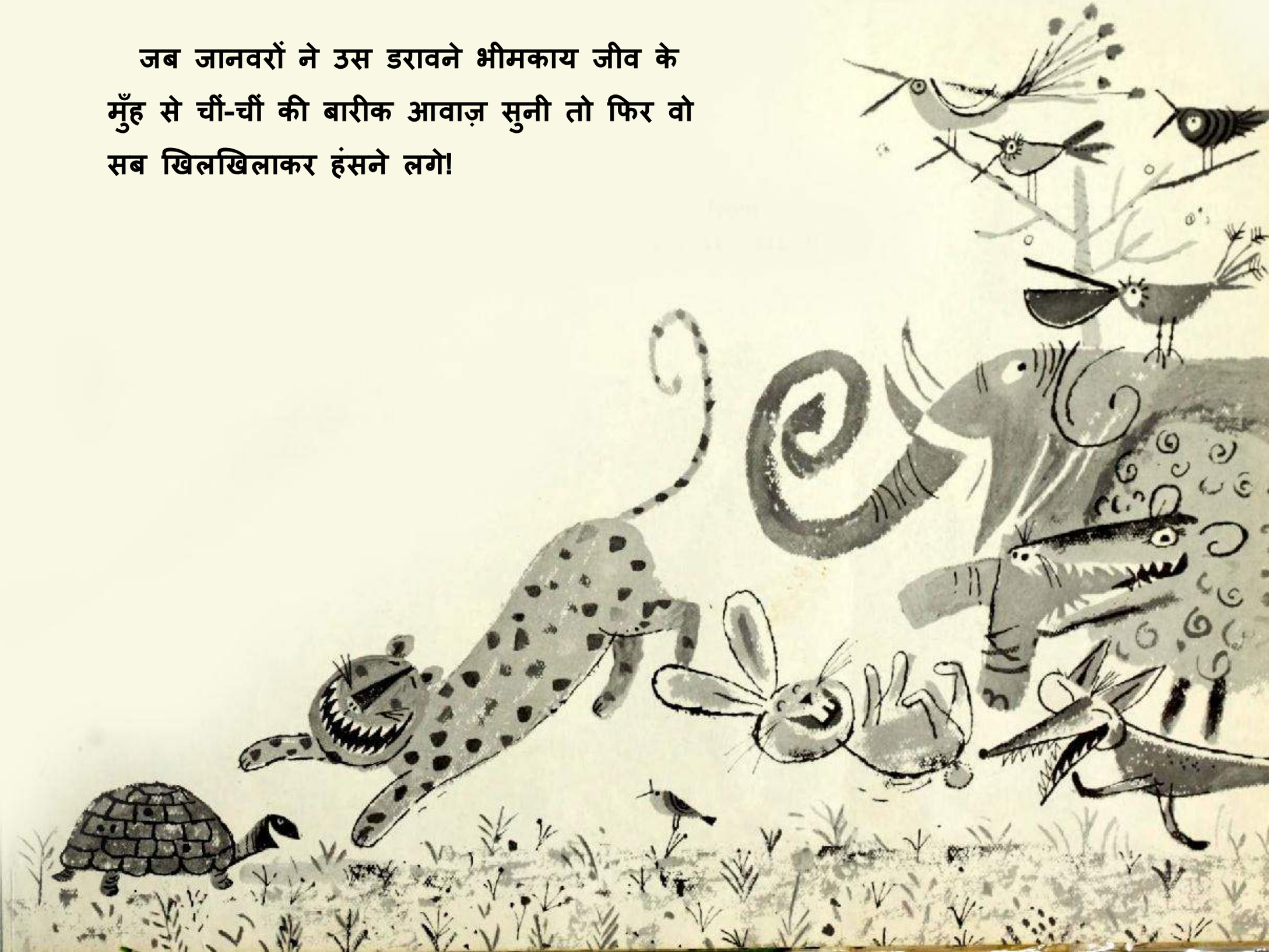

ट्वीडेल इससे इतनी शर्मिंदा हुई कि उसने उन जानवरों का पीछा किया, पर फिर वो खुद अपने पैरों पर फिसलकर गिर गई.

वो कौन थी? उसने बाकी जानवरों को यह समझाने की कोशिश की. पर उसकी बारीक आवाज़ उनकी खिलखिलाहट में किसी को सुनाई नहीं दी.

ट्वीडेल बहुत दुखी हुई. वो वहां से उठकर चल दी.

“मैंने यह क्या किया!,” ट्वीडेल चिल्लाई.
“मैं भूखी, दुखी और बिल्कुल अकेली हूँ.
काश मैं एक इच्छा और मांग सकती!
मैं फिर से वैसी ही छोटी चिड़िया बनना
चाहती हूँ, जैसी मैं पहले थी.” फिर ट्वीडेल
रोने लगी और रोते-रोते सो गई.

जिस पेड़ के नीचे ट्वीडेल सोई थी उस पेड़ पर एक सुन्दर चिड़िया – बेलागलिंका रहती थी. उसने ट्वीडेल की सारी बात सुनीं और उसे ट्वीडेल की हालत देखकर बहुत दुःख हुआ. बेलागलिंका सोचने लगी कि वो ट्वीडेल की कैसे मदद करे.

जब सुबह हुई तो बेलागलिंका को एक हल सूझा.

जल्दी से उसने एक पत्ती पर एक सन्देश लिखा.

इच्छा पूर्ती करने वाली चिड़ियों

कल रात जो मैंने देखा, उसे देख मैं हुई बड़ी दुखी

वो प्राणी रात भर रोया, हुआ बहुत दुखी

उसकी हालत को किसी दयावान की ज़रुरत है

वो बहुत दुखी है, उसे ख़ुशी की ज़रुरत है

मैं चाहती हूँ कि वो जैसी पहले थी, वैसी ही बन जाए

उसकी भी यही अंतिम इच्छा है, काश वो उसे पाए!

यह पढ़कर इच्छा पूर्ती करने वाली चिड़ियों को बहुत गुस्सा आया. वो बेवकूफ ट्वीडेल अब अन्य चिड़ियों को भी दुखी कर रही थी! उन्होंने आपस में बहुत बहस और चर्चा की. पर नियम तो नियम होते हैं. उन्होंने बेलागलिंका को सूचित किया कि ट्वीडेल ने अपने कोटे की तीन इच्छाओं का पहले ही उपयोग कर लिया था.

पर बेलागलिंका ने तुरंत उन्हें अपना जवाब भेजा.

यह मेरी पहली इच्छा है.

मैं तीन नहीं मांगूंगी.

उसे पहले जैसा ही बना दो.

उससे मैं और वो दोनों खुश होंगे!

यह पढ़कर इच्छा पूर्ती करने वाली चिड़ियों को बहुत ताज्जुब हुआ. बहुत कम चिड़िये ही अपनी इच्छा किसी और को देती थीं. उन्होंने बेलागलिंका को बताया कि जल्द ही उसकी यह इच्छा पूरी होगी.

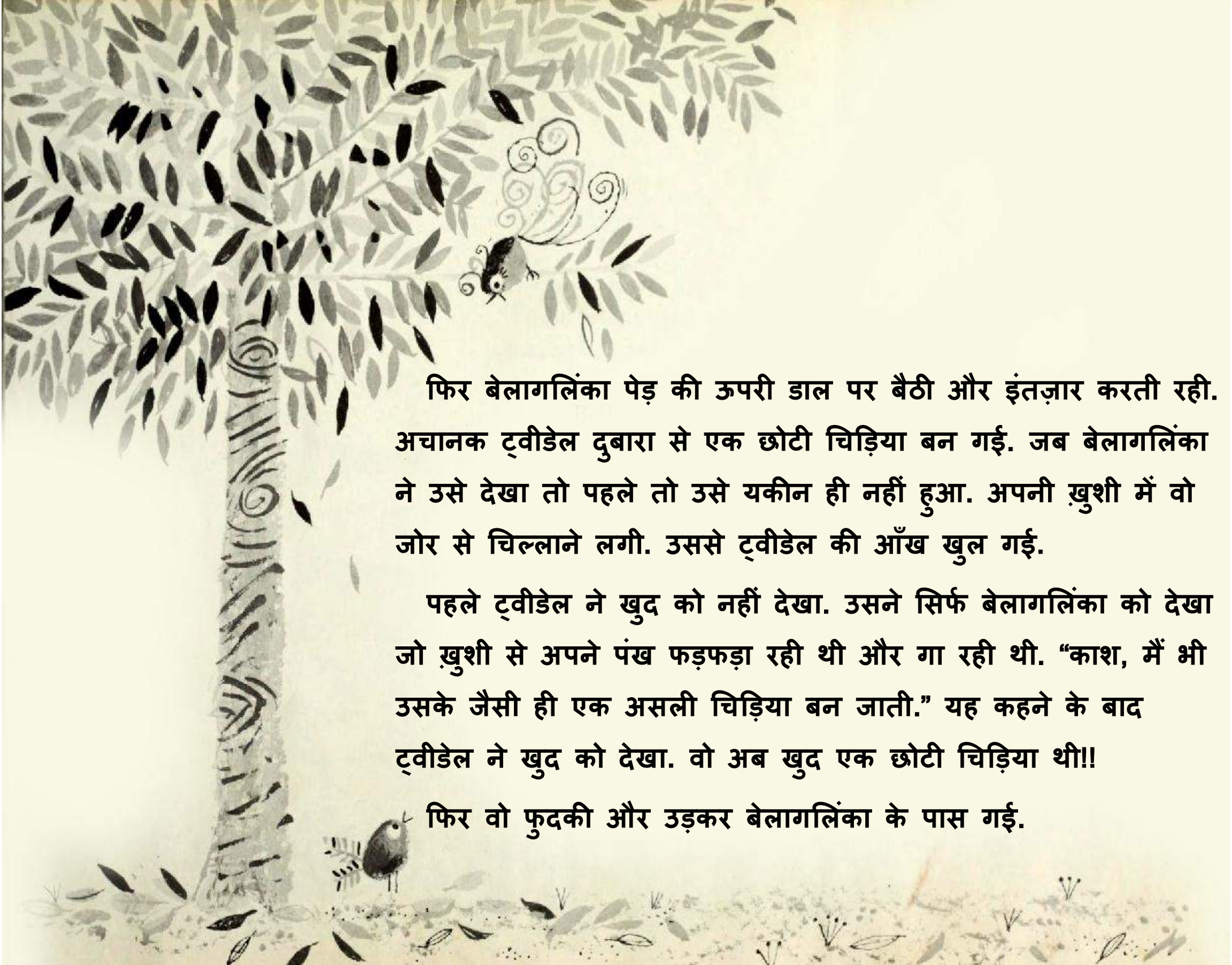

फिर बेलागलिंका पेड़ की ऊपरी डाल पर बैठी और इंतज़ार करती रही. अचानक ट्वीडेल दुबारा से एक छोटी चिड़िया बन गई. जब बेलागलिंका ने उसे देखा तो पहले तो उसे यकीन ही नहीं हुआ. अपनी ख़ुशी में वो जोर से चिल्लाने लगी. उससे ट्वीडेल की आँख खुल गई.

पहले ट्वीडेल ने खुद को नहीं देखा. उसने सिर्फ बेलागलिंका को देखा जो ख़ुशी से अपने पंख फड़फड़ा रही थी और गा रही थी. “काश, मैं भी उसके जैसी ही एक असली चिड़िया बन जाती.” यह कहने के बाद ट्वीडेल ने खुद को देखा. वो अब खुद एक छोटी चिड़िया थी!!

फिर वो फुदकी और उड़कर बेलागलिंका के पास गई.

तब से बहुत समय बीत चुका है. ट्वीडेल ने बेलागलिंका से शादी की और फिर उन्होंने हमेशा मिलकर ख़ुशी के गीत गए. अब उनकी सभी इच्छाएं पूरी हो चुकी थीं.